रतन का चरित्र-चित्रण

रतन वकील इन्द्र भूषण की पत्नी है। पहली पत्नी की मृत्यु के काफी समय बाद वकील साहब रतन से शादी करते है। रतन एक गरीब परिवार की लड़की थी और इसलिए उसके मामा ने उसका विवाह वृद्ध वकील से कर दिया था। किन्तु रतन को इस स्थिति में रहकर भी क्षोभ नहीं होता और वह पूरे मन से वकील साहब की सेवा करती है। पति के वृद्ध होने पर भी रतन के मन में कभी पर पुरुष की बात नहीं आती।

अन्य स्त्रियों के भाँति उसे भी गहनों से प्रेम है और वह जालपा के कंगनों को देखकर इतना मोहित हो जाती है कि वैसे ही कंगन बनवाने के लिए रमानाथ को रुपये देती है।

रतन के चरित्र का सबसे अधिक प्रभावशाली पक्ष वह है कि वह एक आदर्श भारतीय पत्नी कर्त्तव्य का पालन करती है। पति के बीमार होने पर वह जिस लगन से उसकी सेवा करती है। उसे देखकर मन बड़ा प्रभावित होता है।

Scanned by CamScanner

रतन के चरित्र में आत्म सम्मान की भावना भरी हुई है। इसका उदाहरण यह है कि जब मणिभूषण कोठी बेचने की बात करता है और उसे माहवारी खर्च देने की बात करता है तो उसका आत्म सम्मान जाग उठता है और वह सब कुछ त्याग कर निकल पड़ती है। वह सोचती है - "मैं क्यों अपने को अनाथिनी समझ रही हूँ? क्यों दूसरे के द्वार भीख माँगू? संसार में लाखों स्त्रियाँ मेहनत-मजदूरी कर जीवन निर्वहन करती है। क्या मैं कोई काम नहीं कर सकती? मैं कपड़े नहीं सी सकती?"

रतन के चरित्र द्वारा लेखक ने भारतीय जीवन की दो महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर संकेत किया है। ऐसे बेमेल विवाह की समस्याओं की ओर, जहाँ लड़की के घर वाले दरिद्रता के कारण उसकी शादी किसी धनवान वृद्ध से कर देते हैं। द्वितीय, भारतीय जीवन में विधवाओं का अंत कितना शोकमय होता है।

Scanned by CamScanner